Fu – यीशु ने एक बहरे गूंगे को चंगा करता है और चार हज़ार
लोगों को खाना खिलाता है मत्ती १५:२९-३८ और मरकुस ७:३१ से ८:९a
| 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु ने एक बहरे गूंगे को चंगा करता है और चार हज़ार लोगों को खाना खिलाता है

मत्ती १५:२९-३८ और मरकुस ७:३१ से ८:९ए

खोदाई: येशुआ अन्यजातियों के क्षेत्र में जाकर क्या कर रहा है? इसकी तुलना मसीहा की यहूदी अपेक्षाओं से कैसे की जाती है (देखें यशायाह ३५:३-६)? इस भीड़ को खाना खिलाने की तुलना पिछली भीड़ से कैसे की जाती है (देखें Fn – यीशु ने ५,००० को खिलाया)? आप प्रेरितों द्वारा अंतर्दृष्टि की कमी के बारे में क्या कहते हैं? भीड़ को चंगा करने और खिलाने का मसीह का कारण क्या है?

चिंतन: जब आप भारी परिस्थितियों का सामना करते हैं, तो आप अतीत में परमेश्वर के प्रावधान को कितनी अच्छी तरह याद करते हैं? प्रभु की दया की आपकी स्मृति को क्या प्रेरित करेगा? क्या आपको कभी-कभी आपकी आवश्यकताओं को पूरा करने की यीशु की क्षमता पर संदेह होता है? ऐसा कैसे? आप कैसे पता लगा रहे हैं कि वह वास्तव में आपकी “चरवाहा” कर सकता है? आप किस क्षेत्र में अभी भी इसके बारे में अनिश्चित हैं?

यह चार अलग-अलग अवसरों में से अंतिम है जहां हम यीशु को सुसमाचारों में अन्यजातियों की सेवा करते हुए देखते हैं। हर बार, उनके मंत्रालय को बहुत सराहना मिली और बहुत फल मिले। पहली बार जब येशु गदरेन्स के क्षेत्र में आए थे, जो गलील से झील के पार है, तो उन्होंने एक आदमी को ठीक किया था जिसके अंदर राक्षसों की एक सेना थी। गलील सागर (मती ४:१५, १८, १५:२९; मरकुस १:१६, ७:३१, जो वास्तव में एक झील थी, जिसे कभी-कभी तिबरियास झील (यूहन्ना ६:१ और २३), या गेनेसेरेट झील कहा जाता था (लूका ५:१).

वहाँ के लोगों ने यीशु से क्षेत्र छोड़ने के लिए कहा, लेकिन अब वह वापस आ गया था। दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति ने उसके साथ जाने की विनती की, लेकिन प्रभु ने उसे भेज दिया क्योंकि वह उस समय अन्यजातियों के शिष्यों को स्वीकार नहीं कर रहा था। उन्होंने कहा: अपने लोगों के पास घर जाओ और उन्हें बताओ कि प्रभु ने तुम्हारे लिए कितना कुछ किया है, और उसने तुम पर कितनी दया की है (देखें Fg – यीशु ने दो राक्षसों से ग्रस्त लोगों को ठीक किया)। उस व्यक्ति ने डेकापोलिस, या दस अन्यजातियों के शहरों के क्षेत्र में ऐसा किया, और अब हम उस व्यक्ति के मंत्रालय के परिणाम देखते हैं।

Fu – यीशु ने एक बहरे गूंगे को चंगा करता है और चार हज़ार
लोगों को खाना खिलाता है मत्ती १५:२९-३८ और मरकुस ७:३१ से ८:९a
| 2

तब मसीहा ने सोर के आसपास को छोड़ दिया और सीदोन से होते हुए गलील सागर तक और डेकापोलिस के क्षेत्र में चला गया। वह गलील सागर के उत्तर-पश्चिमी किनारे को छोड़कर दक्षिण-पूर्व की ओर चला गया, और डेकापोलिस के क्षेत्र तक पहुँचने के लिए पूर्वी तट के चारों ओर चला गया। हालाँकि डेकापोलिस दस अन्यजातियों के शहरों से बना था जहाँ मूर्तिपूजा प्रचलित थी, प्रत्येक शहर के भीतर छोटे यहूदी समुदाय थे। मरकुस के वृत्तांत में हमने एक ऐसे यूनानी शहर में रहने वाले एक यहूदी की घटना के बारे में पढ़ा, जो बिल्कुल भी असामान्य नहीं था। वहाँ, कुछ साथी यहूदी मसीह को एक ऐसे व्यक्ति के पास लाए जो बहरा था और मुश्किल से बोल पाता था। क्योंकि वह संवाद नहीं कर सका, उसके दोस्तों ने उसके लिए बात की। उन्होंने यीशु से प्रार्थना की कि वह उनके मित्र पर अपना हाथ रखकर उसे ठीक कर दे (मरकुस ७:३१-३२)।

यीशु उसे भीड़ से दूर एक ओर ले गया। महासभा द्वारा अस्वीकार किए जाने के बाद यह प्रभु के मंत्रालय में भारी बदलावों में से एक था (देखें Eh – यीशु को महासभा द्वारा आधिकारिक तौर पर अस्वीकार कर दिया गया है)। संकेत और चमत्कार अब यह प्रमाणित करने के लिए नहीं थे कि वह लंबे समय से प्रतीक्षित मेशियाक था, वे केवल व्यक्तिगत आवश्यकता पर आधारित थे (देखें En – मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)।



ध्यान दें कि यीशु के उपचार की कोई सुसंगत
विधि नहीं है। चमत्कारी रब्बी ने चतुराई से निपटने के लिए उस आदमी के कानों में अपनी उंगलियाँ डाल दीं। फिर उसने बोलने की समस्या से निपटने के लिए उस आदमी की जीभ पर थूका और उसे छुआ। मसीह का स्वर्ग की ओर देखना सबसे अच्छी तरह से प्रार्थना के दृष्टिकोण के रूप में समझा जाता है (यूहन्ना ११:४१-४३,१७:१), और शायद यह मनुष्य को यह दिखाने का एक तरीका भी था कि ईश्वर उसकी शक्ति का स्रोत था। और एक के साथ गहरी आह भरते हुए उससे कहा: खुल जा! एक बहरा व्यक्ति भी इस शब्द को आसानी से होठों से पढ़ सकता है। तुरंत उस आदमी के कान खुल गए, उसकी जीभ ढीली हो गई और वह स्पष्ट रूप से बोलने लगा (मरकुस ७:३३-३५)। वह एक नई दुनिया में था, जिसमें यीशु ने उसे केवल एक अरामी शब्द के साथ रखा था: एफ़फ़ाथा।

नाज़रीन ने उन्हें समुदाय के अन्य यहूदियों को न बताने की आज्ञा दी, क्योंकि यद्यपि अधिकांश लोगों ने उसके बारे में अपना मन नहीं बनाया था, महासभा ने पहले ही उसे अस्वीकार कर दिया था। परन्तु जितना अधिक उसने उन्हें न बताने की आज्ञा दी, उतना ही वे इसके बारे में बात करते रहे। वे अपनी खुशी रोक नहीं सके। यहूदी लोग आश्चर्य से अभिभूत हो गये। उन्होंने कहा, ”उन्होंने सबकुछ अच्छा किया है.” यह

Fu – यीशु ने एक बहरे गूंगे को चंगा करता है और चार हज़ार
लोगों को खाना खिलाता है मत्ती १५:२९-३८ और मरकुस ७:३१ से ८:९a
| 3

क्रिया पूर्ण काल में है, जो हमारे प्रभु के संबंध में उनके दृढ़ विश्वास को दर्शाती है। “वह बहरों को सुनाता है, और गूंगों को बोलने की शक्ति देता है” (मरकुस ७:३६-३७)। वे सभी जानते थे कि ये मसीहाई चमत्कार थे।

यीशु वहाँ से चला गया और गलील झील के किनारे चला गया। फिर वह एक पहाड़ पर चढ़ गया और बैठ गया, जो रब्बी की आधिकारिक शिक्षण स्थिति थी (मती १५:२९)। वह अभी भी डेकापोलिस के अन्यजातियों के क्षेत्र में था (मरकुस ७:३१)। अन्यजातियों की बड़ी भीड़ उसके पास आने लगी। मदद मांगने वाले लोगों में सबसे गंभीर रूप से विकृत लोग भी शामिल थे। यहूदी जनता के लिए चमत्कारों के विरुद्ध निषेध, या व्यक्तिगत आवश्यकता और विश्वास के आधार पर उपचार की शर्त अन्यजातियों पर लागू नहीं होती थी। मसीह के मंत्रालय में चार बड़े बदलाव केवल यहूदियों के लिए थे। अन्यजातियों ने यीशु को मसीहा के रूप में अस्वीकार नहीं किया था; यह केवल यहूदी ही थे जिन्होंने दावा किया था कि वह राक्षस से ग्रस्त था (देखें Ek – यह केवल राक्षसों के राजकुमार बील्ज़ेबब द्वारा किया गया है, कि यह साथी राक्षसों को बाहर निकालता है)। इस प्रकार, अन्यजातियों ने लंगड़ों, अंधों, अपंगों, गूंगों तथा बहुत से अन्य लोगों को लाकर उसके चरणों पर रख दिया। मेशियाक की अलौकिक शक्ति एक बार फिर स्पष्ट हुई जब उसने बड़ी संख्या में लोगों को ठीक किया। वे एक ही समय पर नहीं पहुंचे, और जो लोग ठीक हो गए थे वे दूसरों के लिए जगह बनाने के लिए दूर चले गए। परन्तु किसी भी समय उसके चारों ओर सैकड़ों लोगों की भीड़ होती (मती १५:३०; मरकुस ८:१ए)।

मदद के लिए पुकारने की कल्पना करना कठिन नहीं है जो खुशी की चीखों के साथ मिश्रित हो गई थी, क्योंकि कुछ लोग रोगग्रस्त और विकृत होकर प्रभु के पास आए थे जबकि अन्य स्वस्थ और स्वस्थ होकर जा रहे थे। जो लोग बीमार थे वे स्वस्थ होकर चले गये; जो लोग केवल एक कार्यशील हाथ या पैर के साथ आए थे वे दो के साथ चले गए; और जो लोग अन्धे और बहरे आए थे, वे देखकर और सुनकर चले गए। जो लोग कभी एक शब्द भी नहीं बोलते थे वे अब प्रभु की स्तुति कर रहे थे। जो लोग अपने जीवन में कभी एक कदम भी नहीं चले थे, वे अब खुशी के मारे उछल-कूद रहे थे और दौड़ रहे थे। क्या उपचार के उपहार का दावा करने वाला कोई भी व्यक्ति आज ऐसा कर सकता है? वैसे भी, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि लोग आश्चर्यचकित हो जाते थे जब उन्होंने गूंगे को बोलते, अपंगों को अच्छा होते, लंगड़ों को चलते और अंधों को देखते देखा। और उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर की महिमा की (मती १५:३१ एनएएसबी)।

भीड़ इतनी अधिक थी और ज़रूरतें इतनी अधिक थीं कि उपचार कई दिनों तक चलता रहा। चूँकि उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं था, यीशु ने उस स्थिति को एक सीखने योग्य क्षण के रूप में इस्तेमाल किया। उसने अपने प्रेरितों को अपने पास बुलाया और कहा, मुझे इन लोगों पर दया आती है; वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उनके पास खाने को कुछ नहीं है। यदि मैं उन्हें भूखा घर भेज दूं, तो वे मार्ग में गिर पड़ेंगे, क्योंकि उन में से कुछ लम्बी दूरी तय करके आए हैं (मत्ती १५:३२; मरकुस ८:१b-३)। क्या वह

Fu – यीशु ने एक बहरे गूंगे को चंगा करता है और चार हज़ार
लोगों को खाना खिलाता है मत्ती १५:२९-३८ और मरकुस ७:३१ से ८:९a
| 4

परिचित लगता है? ऐसा होना चाहिए, क्योंकि येशुआ ने मूल रूप से वही बात कही थी जब उसे अपने पीछे चल रहे यहूदियों की एक बड़ी भीड़ पर दया आई थी (देखें Fn – यीशु ने ५,००० को खिलाया)।

यह आज हमें अविश्वसनीय लगता है, लेकिन शिष्यों ने अभी तक यह सबक नहीं सीखा था। हम कितने भी आलोचनात्मक क्यों न हों, हमें यह याद रखना होगा कि उन्हें अभी तक मार्गदर्शन और शिक्षा देने के लिए रुआच हाकोडेश प्राप्त नहीं हुआ है (यूहन्ना १४:१५-२७)। तो कुछ हद तक, उनके पास अभी भी वह सारी आध्यात्मिक रोशनी नहीं थी जो बाद में उनके पास होती। लेकिन उनका विश्वास खोना यहूदी इतिहास में पहले भी हुआ था, यहां तक कि वह पीढ़ी जो रीड्स सागर के माध्यम से चली थी (मेरी टिप्पणी देखें निर्गमन Ci – जल विभाजित थे और इज़राइली सूखी भूमि पर समुद्र के माध्यम से चले गए), जल्द ही शिकायत कर रहे थे यहोवा के प्रावधान की कमी के बारे में! लेकिन क्या यह आज भी मानव स्वभाव नहीं है कि जब हमारे बीच ईश्वर की उपस्थिति की वास्तविकता की बात आती है तो उसकी याददाश्त कम हो जाती है?845

बारह ने उस क्षेत्र में इतने सारे लोगों को खिलाने के लिए भोजन प्राप्त करने की असंभवता को पहचाना। तो उन्होंने उत्तर दिया: इस सुदूर स्थान में हमें इतनी भीड़ को खिलाने के लिए पर्याप्त रोटी कहाँ से मिल सकती है? वे ५,००० लोगों को खाना खिलाने के बारे में कितनी जल्दी भूल गए थे! मसीह ने उनसे पूछा: तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? सात, उन्होंने उत्तर दिया: और कुछ छोटी मछलियाँ। क्या संयोग है, एक छोटी सी रोटी और फिर कुछ छोटी मछलियाँ! उसने भीड़ से ज़मीन पर बैठने को कहा (मती १५:३३-३५; मरकुस ८:४-६ए)। क्योंकि यह भीड़ लगभग उतनी ही बड़ी थी जितनी पिछली भीड़ को खिलाया गया था, ऐसा लगता है कि वितरण को आसान बनाने के लिए मसीहा ने भी इस बड़ी सभा को सैकड़ों और पचास के समूह में बैठाया था।



फिर उसने सात रोटियाँ और कुछ छोटी मछलियाँ लीं
और धन्यवाद दिया। उसने उन्हें तोड़ा और लोगों में बाँटने के लिये बारहों को दे दिया। हमेशा की तरह, येशुआ का प्रावधान पर्याप्त से अधिक था: उन सभी ने खाया और संतुष्ट थे। इसके बाद बारहों ने बचे हुए टूटे हुए टुकड़ों की सात बड़ी टोकरियाँ उठाईं। खाने वालों की संख्या महिलाओं और बच्चों के अलावा लगभग चार हजार पुरुषों की थी और कुल मिलाकर पंद्रह हजार लोग हो सकते थे (मती १५:३६-३८; मरकुस ८:६बी-९ए)।

Fu – यीशु ने एक बहरे गूंगे को चंगा करता है और चार हज़ार
लोगों को खाना खिलाता है मत्ती १५:२९-३८ और मरकुस ७:३१ से ८:९a
| 5

यहां उल्लिखित सात बड़ी टोकरियाँ ५,००० यहूदियों को खाना खिलाने में उपयोग की जाने वाली बारह टोकरियों से भिन्न प्रकार की हैं। पिछले भोजन में उपयोग की जाने वाली टोकरी का प्रकार एक छोटा यहूदी कंटेनर था जिसे कोफिनोस कहा जाता था, जिसका उपयोग एक व्यक्ति द्वारा एक या दो भोजन के लिए भोजन ले जाने के लिए यात्रा करते समय किया जाता था। हालाँकि, डेकापोलिस भोजन में उपयोग की जाने वाली टोकरियाँ स्पुरिडास थीं, जो स्पष्ट रूप से गैर-यहूदी और काफी बड़ी थीं। वे एक वयस्क व्यक्ति को भी पकड़ सकते थे, और यह ऐसी टोकरी में थी कि रब्बी शाऊल को दमिश्क की दीवार में एक छेद के माध्यम से उतारा गया था (प्रेरितों ९:२५)। परिणामस्वरूप, उन सात बड़ी टोकरियों में यहूदियों को खाना खिलाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली बारह छोटी टोकरियों की तुलना में काफी अधिक भोजन था। चूँकि इस भीड़ के पास तीन दिनों तक खाने के लिए कुछ नहीं था, इसलिए उन्होंने अन्य लोगों की तुलना में अधिक खाया होगा, जो केवल एक दिन के लिए भोजन के बिना थे (मत्ती १४:१५)।

अल्फ्रेड एडर्सहैम ने कहा कि, “प्रभु ने अपने मंत्रालय के प्रत्येक चरण को भोजन के साथ समाप्त किया। उन्होंने पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाकर अपनी गैलीलियन सेवकाई समाप्त की। उसने चार हजार लोगों को खाना खिलाकर अपनी अन्यजाति सेवकाई समाप्त की। और क्रूस पर अपनी मृत्यु से पहले उसने यहूदी सेवकाई को ऊपरी कमरे में अपने स्वयं के शिष्यों को खिलाकर समाप्त कर दिया।”